भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 3 | **मई** 2002 | **अंक** 5

सत्य कहहिं लिखि कागद कोरे

कौन सुनने वाला है हमारी। अगर तुम राजनीति करते शायद लेखन के क्षेत्र में हमारी भी धाक होती। हमने वो काम नहीं किया जो आज के लेखक कर रहे हैं।

मुझे इंसान चाहिए लेकिन हम इंसान क्यों नहीं बन सके, मुझे बार-बार ये पंक्तियाँ याद आती हैं—

''देखा जो उसको देखकर हैरान रह गया
कैसे हमारे बीच एक इंसान रह गया।''

लेकिन जो इंसान है वो मुझे आज तक नहीं मिल पाया। मेरी तो यही इच्छा है कि हम एक बेहतर इंसान बन सकें ताकि स्वच्छ समाज का निर्माण हो सके।

मैं तो फिल्में देखता नहीं लेकिन फिल्मों को देखकर समाज में जो प्रभाव फैल रहा है वह काफी भयावह है। नयी संस्कृति जो पैदा हो रही है वह समाज के लिए ठीक नहीं है।

जातिवाद तो खत्म हुआ लेकिन वंशवाद हावी हो गया। इस वंशवाद की परम्परा को नेहरू खानदान ने बढ़ावा दिया, वे तो चले गये लेकिन वंशवाद नहीं खत्म हुआ। आज हमारे यहाँ की राजनीति जातिवादी से वंशवादी हो गयी है।

लेखक का सम्मान पहले की तुलना में घटा है। भाजपा की सरकार है तो भाजपा के लेखकों को फायदा होगा। पता है किस प्रकार से लाबिंग की जाती है क्योंकि मैं साहित्य अकादमी, हिन्दी अकादमी में रहा तो वहाँ मेरे पास लोग आते थे कि फलाँ व्यक्ति को फलाँ पुरस्कार मिलना चाहिए। पुरस्कार तो छीने गये हैं।

मृत्यु एक शाश्वत सत्य है, इससे इनकार नहीं किया जा सकता, बस यही सोचता हूँ कोई काम अधूरा छोड़कर न जाऊँ। **— विष्णु प्रभाकर**

केशव ! कहि न जाइ का कहिये

तुलसीदास ने कहा था हे केशव! क्या कहूँ कुछ कहा नहीं जाता। आज देशवासियों के समक्ष यही स्थिति है, देश की स्थिति देखकर कुछ कहा नहीं जाता। पंजाब में पब्लिक सर्विस कमीशन के अध्यक्ष रविन्द्रपाल सिंह सिद्धू ने अपने पद का दुरुपयोग करते हुए पचासों करोड़ की धन और सम्पत्ति अर्जित की।

कितने अयोग्य व्यक्तियों को उच्च पद पर आसीन कराया। पद प्राप्त करने वालों ने जिस कीमत पर वह पद प्राप्त किया उस कीमत का कई गुना जनता से वसूल किया होगा। यह ठस पशु की कहानी दुहराता है जो अपनी पूँछ स्वयं खाता है। कथाशिल्पी शरतचन्द्र का कथन है—''सत्ता इस बात को खूब समझती है कि मनुष्य से पशु का काम लेने के लिए पहले उसे पशु बनना पड़ता है।'' सत्ता का यह स्वरूप पग-पग पर स्पष्ट हो रहा है। वयोवृद्ध साहित्यकार विष्णु प्रभाकरजी के अनुसार ''सत्ता की प्रकृति आक्रमणशील और आधिपत्य जमाने वाली होती है। सत्ता स्थायी भी नहीं होती। निरन्तर परिवर्तित और स्थानान्तरित होती रहती है वह। ऐसी स्थिति में उससे जुड़ी व्यवस्था अवसरवादी और क्रय-विक्रय की राजनीति तथा नानारूप शोषण की प्रवृत्ति की शिकार हो जाती है।''

आज देश के बुद्धिजीवी, लेखक, प्रकाशक सत्ता से जुड़ी व्यवस्था से किस कदर प्रभावित हैं इसकी जितनी भी चर्चा की जाय थोड़ी है। प्रतिवर्ष देश में सरकार के विभिन्न विभागों द्वारा शिक्षा संस्थाओं, पुस्तकालयों आदि के लिए करोड़ों की पुस्तकें खरीदी जाती हैं। उनका चयन क्या पुस्तक, लेखक, प्रकाशक की गुणवत्ता पर आधारित होती है, नहीं, उन चयनकर्ता तथा आदेश पारित करने वाले पदाधिकारी के विवेक पर आदेश निर्गत होते हैं। उस विवेक का स्वरूप क्या है, इसे बताने की आवश्यकता नहीं—राजनीतिक प्रभाव, पैसा और आज एक तीसरी सत्ता भी आ गई है—माफियानुमा ठेकेदारी।

अब देखिए वे पुस्तकें जिन पुस्तकालयों में जाती हैं कितने पाठकों से उनका साक्षात्कार होता है, क्या पुस्तकें पाठकों को पढ़ने के लिए प्रेरित करती हैं? क्या उन पुस्तकों की सूची प्रगट की जाती है। आज पारदर्शिता का दम्भ भरने वाली सरकार यानी उसके व्यवस्थापक यह जोखिम उठाने को तैयार हैं?

तुलसीदास की पंक्तियाँ हैं—

रवि कर-नीर बसै अति दारुन मकररूप तेहि माहीं।
बदनहीन सो ग्रसै चराचर, पान करन जे जाहीं॥

सूर्य की किरणों में भ्रम से जो जल दिखायी देता है, उस जल में एक भयानक मगर रहता है, उस मगर के मुँह नहीं है, तो भी वहाँ जो जल पीने जाता है, चाहे वह जड़ हो या चेतन, यह मगर उसे ग्रस लेता है। अर्थात् यह संसार सूर्य की किरणों में जल के समान भ्रमजनित है।

केशव! कहि न जाइ का कहिये।
देखत तव रचना बिचित्र हरि! समुझि मनहिं मन रहिये॥

—पुरुषोत्तमदास मोदी

सम्पादक के नाम विष्णु प्रभाकरजी का पत्र

Ph. 7156721 बी 151, महाराणा प्रताप एन्क्लेव
पीतमपुरा, दिल्ली 110034
17.4.02

प्रिय भाई,

'भारतीय वाङ्मय' के अंक बराबर मिलते रहते हैं। उसका एक बड़ा लाभ यह है कि हिन्दी साहित्य जगत की गतिविधियों से हमारा सम्बन्ध बना रहता है। दूसरे बन्धु क्या कहते हैं यह भी हम तक पहुँच जाता है।

इधर मेरे कई मित्र एक के बाद एक बिछुड़ गये। विश्वास नहीं आता कि वे अब नहीं रहे। केरल हिन्दी प्रचार सभा के प्रधानमंत्री **श्री वेलायुधन नायर जी** का घर मेरा घर था। तीन दिन पूर्व फोन आया वे नहीं रहे। अगले दिन एक और फोन आया भोपाल से कि हमीदिया कॉलेज के हिन्दी के प्राध्यापक **डॉ० कृष्ण कमलेश** भी अचानक चले गये। अभी पिछले महीने छ: दिन मैं उनके साथ रहा, उनका घर भी मेरा घर था। साहित्यकारों में मुझसे आयु में बड़े श्री हरिवंश राय बच्चन के लिये तो जीवन और मृत्यु का अर्थ कुछ नहीं रहा। देवेन्द्र सत्यार्थी तीन वर्ष बड़े हैं पर वे एक शब्द नहीं सुन सकते, वे भी घर में बन्द हैं। भीष्म जी तीन साल छोटे हैं और अभी सक्रिय हैं। मेरे नब्बे वर्ष 21 जून को पूरे हो जायेंगे। काम तो करना ही पड़ता है मजदूर हूँ पर शरीर अब थक गया है पर नये आने वाले लेखक रोज अपनी पाण्डुलिपियाँ भेज देते हैं। सेवा लेने वाले अनेक हैं, करने वाला कोई नहीं।

शेष शुभ स्नेही

विष्णु प्रभाकर

यत्र तत्र सर्वत्र

इंटरनेट विदेशों में हिन्दी सीखने का प्रमुख माध्यम बन गया है। दैनिक अखबार जो विदेशों में इंटरनेट पर उपलब्ध है, उनसे विदेशी पाठक हिन्दी सीखते हैं। हैम्बर्ग (जर्मनी) की महिला लीना 'दैनिक जागरण' की इंटरनेट पर नियमित पाठक हैं, इससे हिन्दी सीखी। हिन्दी के माध्यम से उनको भारतीय संस्कृति, गंगा और उसके दूषित होने की समस्या की भी जानकारी प्राप्त हुई। ऐसे हिन्दी समाचार पत्रों को अपनी भाषा के प्रति सजग रहने की अपेक्षा है ताकि उसके पाठकों को शुद्ध हिन्दी सीखने को मिले।

★ ★ ★

यह साहित्य का सबसे दोगला दौर है जब लेखक अपनी रचनात्मकता को चुकते और चुकते देखकर स्त्री अथवा दलित विमर्श जैसे मुद्दों में अपना अस्तित्व ढूँढ़ रहे हैं। इन लेखकों का अपनी पीढ़ी से कोई संवाद नहीं है।

पहले से तय पुरस्कारों को दिये जाने के फैसले का नाटक करना साहित्यिक अपसंस्कृति है।

कई भोले रचनाकार महीनेभर के लिए दिल्ली में डेरा डाल लेते हैं और पुरस्कार की घोषणा के पश्चात् हारे सिपाही की तरह अपने शहर कूच कर जाते हैं। **— कमलेश्वर**

★ ★ ★

आज कुछ रचनाकारों द्वारा लेखन क्षेत्र में अजब ढंग से पूँजी निवेश किया जा रहा है। रचना छपवाने से लेकर उस पर समीक्षा और संगोष्ठी करवाना, रचना को सम्मानित पुरस्कृत करवाना विशुद्ध व्यावसायिक कुशलता के साथ किया जा रहा है।

अलभ है इष्ट अत: अनमोल,
साधना ही जीवन का मोल।

— ममता कालिया

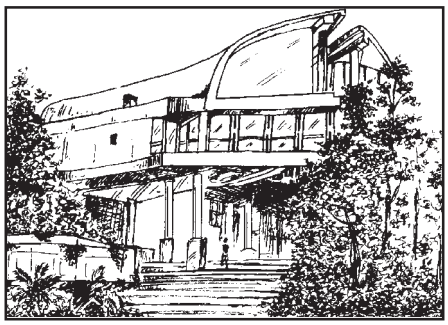

ज्ञान-प्रवाह

मनोनिवृत्ति: परमोपशान्ति:
सा तीर्थवर्या मणिकर्णिका च।
ज्ञानप्रवाहा विमलादिगंगा
सा काशिकाहं निजबोधरूपा॥

— आदि शंकराचार्य

समस्त मानसिक बौद्धिक कार्य-कलापों का अवसान परम शान्ति है—पावन से पावनतम तीर्थ, मणिकर्णिका मुझमें है। आदिकाल से सतत प्रवाहित विमला गंगा मुझमें हैं। इस प्रकार आत्मचेतन के शुद्ध रूप में मैं काशिका हूँ।

आदिशंकराचार्य की वाणी को चरितार्थ करती हुई श्रीमती विमला पोद्दार ने कलकत्ता से काशी आकर काशीवास के निमित्त गंगातट पर ज्ञान-प्रवाह की स्थापना की है, जो समस्त बौद्धिक सांस्कृतिक साहित्यिक कार्यक्रमों का केन्द्र है। उन्होंने सिद्ध कर दिया है कि काशीवास गंगास्नान और भगवद् दर्शन तथा पूजन मात्र नहीं है, वरन् आदि विश्वेश्वर के जटा जूट से प्रवाहित ज्ञान-गंगा में अवगाहन करना है।

पिछले दिनों 1 नवम्बर 2001 को 'ज्ञान-प्रवाह' के विशाल सभागार, पुस्तकालय तथा कार्यालय भवन का उद्घाटन उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री विष्णुकान्त शास्त्री द्वारा श्री लक्ष्मीमलजी सिंघवी तथा विशिष्ट विद्वानों, अतिथियों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

वर्षपर्यन्त साहित्यिक सांस्कृतिक आयोजन होते रहते हैं। अगस्त 2002 से जुलाई 2003 तक के कार्यक्रम घोषित हो गये हैं, जिनमें प्रमुख है—काशी को शाक्त का अवदान, संस्कृत नाटक कार्यशाला, लिपि प्रवाह, शाकुन्तलम् नाटक का अभिनय, गुफा वास्तु, वेद विद्या, पुराण पर्व, बौद्ध तथा ब्राह्मण कला, शिल्पशास्त्र, वैदिक ज्योतिष आदि।

काशी में ज्ञान-प्रवाह आज गंगा-प्रवाह का पर्याय बन गया है।

प्रसादाद् विश्वनाथस्य काश्यां भागीरथीतटे।
वृद्धिर्ज्ञानप्रवाहे स्यात् संस्कृतेश्चानुशीलने॥

प्रसाद पर्व

2-3 अप्रैल 2002 को ज्ञान-प्रवाह में प्रसाद पर्व का आयोजन हुआ। प्रथम संध्या 'प्रसाद के काव्य संग्रहों व नाटकों में गीत' पर प्रसाद की 'कामायनी' तथा 'आँसू' के अंग्रेजी रूपान्तरकार कलकत्ता से पधारे मुख्य अतिथि श्री जयकिशनदास सादानी ने कहा—कामायनी प्रसादजी की समस्त रचनाओं की मुकुटमणि है। प्रसादजी की संगीत में गहरी पैठ थी। उनके सम्पूर्ण नाटकों में कुल 110 गीत विभिन्न पात्रों द्वारा गाये गये हैं। इस सभा की अध्यक्षता राय आनन्दकृष्ण ने की। डॉ० प्रदीप दीक्षित ने प्रसाद की कुछ पंक्तियों का गायन किया।

दूसरी संध्या प्रसादजी के दो प्रमुख काव्य 'कामायनी' और 'आँसू' के अंग्रेजी अनुवाद पर केन्द्रित थी। सादानीजी ने दोनों के अंग्रेजी पद्यानुवाद से चुने हुए पद्य हिन्दी व अंग्रेजी में सुनाये। उन्होंने कहा—प्रसाद की कृति का अनुवाद एक बड़ी चुनौती है जिसमें भाषा, अर्थ, भाव, शब्द चयन संदेश आदि को हृदयंगम करना होता है। इस सभा की अध्यक्षता कर रहे 'प्रसाद के अंतरंग संस्मरणों' के प्रस्तुतकर्ता श्री पुरुषोत्तमदास मोदी ने शब्द चयन और लयात्मकता के लिए सादानीजी की सराहना की। व्याख्यान के पश्चात डॉ० भानुशंकर मेहता के संयोजन में प्रसाद के काव्य 'आँसू' की संगीतात्मक प्रस्तुति हुई।

इंटरनेट व सी डी पर पुस्तकें

भारत में नेशनल बुक ट्रस्ट बहुत शीघ्र भारतीय साहित्य की श्रेष्ठ पुस्तकों को इंटरनेट के साथ-साथ सी डी के रूप में उपलब्ध कराने की तैयारी कर रहा है। छपी हुई पुस्तकों की बनिस्बत ये ई-बुक्स सस्ती होंगी। केन्द्रीय सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अधिकारियों के साथ ट्रस्ट की बैठक में इस योजना का प्रारूप तैयार कर लिया गया। ट्रस्ट मंत्रालय के ईआरआटीसी विभाग को भारतीय भाषाओं की 5 हजार पुस्तकें देगा, जिन्हें यह डिजिटलाइज करेगा। ट्रस्ट के निदेशक डॉ० निर्मलकांति भट्टाचार्जी ने बताया कि इस योजना में बाल साहित्य की प्रस्तुति और भी रोचक बनाई जाएगी। इंटरनेट पर इनमें साउंड और एनीमेशन भी दिया जाएगा। अगले 3 मास में इंटरनेट और सी डी पर दौ सौ से अधिक पुस्तकें उपलब्ध करा दी जाएँगी।

रामायण कला संग्रहालय

देश का पहला रामायण कला संग्रहालय मध्य प्रदेश के टीकमगढ़ जिले के ओरछा में स्थापित किया जायेगा। इस कार्य के लिए ओरछा की पुरानी इमारत बारूदखाना को नया स्वरूप दिया जा रहा है। रामायण कला संग्रहालय के लिए देश भर की आंचलिक लोक शैलियों में प्रचलित रामलीला के पारम्परिक मुखौटे और मुकुट का भी बड़ा संग्रह किया गया है। भारत के अलावा इण्डोनेशिया, बर्मा, सिंगापुर, थाईलैंड और लाओस की रामलीला की डिजिटल रिकार्डिंग भी करवाई गई है। देश में रामकथा और रामायण के सभी संदर्भ ग्रंथों को भी यहाँ के पुस्तकालय में रखा जायेगा। अब देश-विदेश के शोधार्थी रामायण के संदर्भ ग्रंथ, प्रदर्शन की लोकशैलियों, रामायण के प्रदर्शन से जुड़ी कलासामग्री एक ही स्थान पर पा सकेंगे। मध्य प्रदेश हैरीटेज डेवलपमेंट ट्रस्ट के माध्यम से ओरछा का समग्र विकास कराया जा रहा है। इसके लिए योजना आयोग से मिले छह करोड़ रुपये ट्रस्ट को दिये गये हैं। इसमें से 43 लाख रुपये की लागत से ओरछा स्मारकों के अनुरक्षण का काम किया जा रहा है।

'सपनों में बनता देश' पुस्तक का लोकार्पण

सूचना और प्रसारणमंत्री सुषमा स्वराज ने इण्डिया इन्टरनेशनल सेन्टर में 'प्रेस, राजनीति और न्यायपालिका' विषय पर आयोजित पहले राजेन्द्र माथुर स्मृति व्याख्यान में उन्होंने राजेन्द्र माथुर के लेखों और सम्पादकीयों के संग्रह 'सपनों में बनता देश' का लोकार्पण किया। सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित 2 खण्डों की इस पुस्तक के लोकार्पण के अवसर पर दिवंगत राजेन्द्र माथुर की पत्नी श्रीमती मोहिनी माथुर व प्रकाशक महेश भारद्वाज भी उपस्थित थे।

सूचना प्रसारणमंत्री ने बताया कि 'सपनों में बनता देश' के लेख सामान्य लेखों की तरह नहीं बल्कि एक उपन्यास की तरह पठनीय व रोचक हैं।

पत्र-पत्रिकाएँ

उलुपी (त्रैमासिक पत्रिका)

गुवाहाटी से प्रकाशित उलुपी (पूर्वोत्तर में हिन्दी विशेषांक) का यह अंक हिन्दी-चिन्तन की दिशा-दशा का यथार्थ आकलन प्रस्तुत करता है। यह अंक अपने आप में हिन्दी-हितैषियों की आँखों पर से परदे उठाने के लिए अत्यधिक उपयोगी है। हिन्दी की विविध विधाओं पर चर्चाएँ, आलोचनाएँ और एक-दूसरे पर दोषारोपण धड़ल्ले से हो रहे हैं, किन्तु इस विशाल देश के उस कोने में हिन्दी सिसक रही है जिसका आँसू पोछने के लिए महात्मा गाँधी ने क्या नहीं किया था। उन्होंने बाबा राघवदास को हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए उत्तर प्रदेश से उस सुदूर पूर्वोत्तर प्रान्त में भेजा था। 'उलुपी' ने राष्ट्रभाषा हिन्दी के पक्षधरों को अपना उत्साह और अपनी कार्यनिष्ठा पूर्वोत्तर भारत पर केन्द्रित करने का पुरजोर आग्रह किया है। उस क्षेत्र में हिन्दी की क्या स्थिति है, इसकी भरपूर पाठ्य-सामग्री 'उलुपी' ने प्रस्तुत की है। इस पत्रिका का हर अंक पठनीय और संग्रहणीय है। एक अंक का मूल्य पन्द्रह रुपए और वार्षिक मूल्य साठ रुपए है। इस पत्रिका के सम्पादक श्री रामशंकर रवि और उनके सहयोगी धन्यवाद के अधिकारी हैं। पता है—बाई लेन-एक, राजगढ़ रोड़, गुवाहाटी (असम)-781003।

सहकार (नवम्बर 2001 विविधा अंक)
(विगत 21 वर्षों से प्रकाशित)
सम्पादक : भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश'
सम्पर्क : हिन्दी सहकार संस्थान
964 सिविल लाइन्स (कल्याणी)
उन्नाव-209801 (प्रति अंक 15.00)

सुधारक (मासिक)
सम्पादक : दिवाकर
सम्पर्क : मोहनी भवन, धरमपेठ
नागपुर-44010 (वार्षिक 40.00)

आत्मसंभवा (प्रवेशांक)
सम्पादक : डॉ० मोहन
सम्पर्क : यू 7 ए, सी 3 विश्वविद्यालय परिसर
ताराबाग, वर्धमान-713104
(एक प्रति 40.00, वार्षिक 150.00)

फिलहाल (द्वैमासिक)
सम्पादक : प्रीति सिन्हा
सम्पर्क : एम० 46/2 श्रीकृष्णनगर
पटना-800 001 (वार्षिक 40.00)

निराला पत्रिका (प्रवेशांक)
सम्पादक : कमलाशंकर अवस्थी
सम्पर्क : आदर्शनगर, उन्नाव, जमालपुर (बिहार)
(एक प्रति 10.00, वार्षिक 50.00)

स्मृति-शेष

रामदयाल पाण्डेय

बिहार के पिछली पीढ़ी के कवियों में सुचिन्तित एवं भावप्रवण कवि **पं० रामदयाल पाण्डेय** का पटना में 20 मार्च को 87 वर्ष की आयु में शरीरान्त हो गया। कई वर्षों से कूल्हे की हड्डी टूटने से चलने-फिरने में असमर्थ थे, किन्तु उनका कविहृदय जाग्रत था। पत्रकार, कवि और सुलेखक के रूप में उन्होंने यश प्राप्त किया था। 1942 के 'भारत छोड़ो' आन्दोलन में सक्रिय भाग लेकर भी उन्होंने राष्ट्रधर्म के निर्वाह के लिए स्वतंत्रता सेनानी की पेंशन स्वीकार नहीं की। बाद में बिहार सरकार के राजभाषा विभाग के हिन्दी पदाधिकारी के रूप में उन्होंने सरकारी कार्यालयों में हिन्दी के प्रयोग के लिए अथक प्रयास किया था। बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद के निदेशक के पद पर उन्होंने परिषद की गरिमा बढ़ायी थी। हिन्दी-आन्दोलन के वे पुरोधा थे। राजकीय सम्मान के साथ उनकी अन्त्येष्टि-क्रिया की गयी।

एम०के० वेलायुधन नायर

केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम के मंत्री **श्री एम०के० वेलायुधन नायर** का 14 अप्रैल 2002 को रात्रि 8.40 पर रीजनल कैंसर सेन्टर, तिरुवनन्तपुरम में निधन हो गया। वे 67 वर्ष के थे। श्री नायर ने केरल हिन्दी प्रचार सभा के विकास में अभूतपूर्व योगदान प्रदान किया। वे केरल में हिन्दी प्रचार के स्तम्भ थे, उनके निधन से अपूरणीय क्षति हुई है। विश्वविद्यालय प्रकाशन से उनके मधुर सम्बन्ध थे। भगवान् विश्वनाथ उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें और उनके सहकर्मियों को यह दु:ख वहन करते हुए उनके कार्यों को अग्रसर करने की क्षमता प्रदान करें।

पुरस्कार-सम्मान

विधि मंत्रालय द्वारा पुरस्कृत

हरिश्चन्द्र महाविद्यालय, वाराणसी के विधि-अध्यापक **श्री अरविन्दकुमार** की पुस्तक 'भारतीय साक्ष्य अधिनियम' पर भारत सरकार के विधि मंत्रालय ने 10 हजार रुपये का पुरस्कार प्रदान किया है। विधि मंत्रालय हिन्दी में विधि-लेखन को प्रोत्साहित करता है।

महाराणा कुम्भा अलंकरण

जोधपुर के हिन्दी विद्वान् **डॉ० वेंकट शर्मा** को महाराणा मेवाड़ फाउंडेशन द्वारा महाराणा कुम्भा अलंकरण से सम्मानित किया गया। अप्रैल में अरुणाचल प्रदेश के राज्यपाल श्री अरविन्द दवे ने उदयपुर में प्रदान किया।

हिन्दी-उर्दू अवार्ड

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री विष्णुकान्त शास्त्री ने 8 अप्रैल 2002 को ताज होटल, लखनऊ में आयोजित समारोह में कादम्बिनी के सम्पादक **श्री राजेन्द्र अवस्थी** को प्रदान किया। पुरस्कार के अन्तर्गत 25 हजार रुपये स्मृति चिह्न तथा अंगवस्त्र दिये गये।

मरणोपरांत पं० दीनदयाल पुरस्कार

साहित्यकार पत्रकार और राजनेता **डॉ० राममनोहर त्रिपाठी** को मरणोपरांत पं० दीनदयाल पुरस्कार उनके चारवर्षीय पौत्र अनुपम को अन्य परिजनों की उपस्थिति में 26 मार्च 2002 को मुम्बई में दिया।

डॉ० रामजी मिश्र को भारत गौरव सम्मान

महामहोपाध्याय डॉ० रामजी मिश्र को इण्डिया इण्टरनेशनल फ्रेण्डशिप सोसाइटी, नई दिल्ली द्वारा भारतगौरव सम्मान से सम्मानित किया गया है। इसके पूर्व डॉ० मिश्र काशीरत्न एवं प्रयाग गौरव सम्मान से भी सम्मानित किए जा चुके हैं। अनेक साहित्यिक संस्थाओं ने भी डॉ० मिश्र को अपनी मानद उपाधियों से विभूषित किया है।

कई पुस्तकों के लेखक डॉ० रामजी मिश्र सम्प्रति आकाशवाणी वाराणसी में कार्यक्रम अधिशासी पद पर कार्यरत हैं।

पुस्तक समीक्षा

संस्मरण व स्मृति आरेखन

संस्मरण, किसी भी चरित्र के बारे में अतीत की स्मृतियों का पुन: आरेखन होता है। इस स्मृति यात्रा में कौंध तब और भी घनी हो जाती है जब उक्त चरित्र लेखक होता है। अगर उस लेखक का कृतित्व सर्वज्ञात और उसका व्यक्तित्व तथा निजी जीवन कुछ अज्ञात होता है तो संस्मरण में उसकी प्रासंगिकता तो मुखर होती ही है उस लेखक की जिन्दगी और भी आकर्षक हो जाती है। हिन्दी के चर्चित कवि जयशंकरप्रसाद का व्यक्तित्व कुछ ऐसा ही रहा। उनके कृतित्व के मूल्यांकन के तो अनेक प्रसंग उपस्थित मिलते हैं लेकिन उनकी जिन्दगी को जानने के तथ्यात्मक संदर्भ कम ही दृष्टिगोचर होते हैं। प्रसाद के प्रशंसक और काशी के चर्चित प्रकाशक पुरुषोत्तमदास मोदी ने 'अंतरंग संस्मरणों में जयशंकर प्रसाद' नामक पुस्तक का सम्पादन कर इस अभाव की पूर्ति की है।

प्रसाद के साहित्य में गहरा अनुराग रखने वाले मोदीजी विद्यार्थी काल से ही प्रसाद की जिन्दगी के प्रति भी जिज्ञासु रहे हैं और इसीलिए उनके संस्मरणों को जुटाने में एक लम्बा समय उन्होंने दिया। संस्मरणों की यह पुस्तक कमोबेश प्रसाद की जीवनी की कमी को भी पूरा करती है। प्रसाद जी का जन्म एक कुलीन परिवार में हुआ था। विनोदशंकर व्यास के संस्मरण से पता चलता है कि काशी में दो ही स्थानों में गुणियों का आदर था, एक काशीनरेश के यहाँ और दूसरे सुँघनी साहू के यहाँ। सुँघनी साहू के परिवार में ही प्रसाद जी जन्मे थे। काशी नरेश के अभिवादन में लोग 'महादेव' कहा करते थे और सुँघनी साहू के लिए भी वही सम्मानसूचक 'महादेव' अभिवादन होता था। इस पुस्तक के संस्मरणों से पता चलता है कि प्रसाद जी की शिक्षा केवल सातवें दर्जे तक हो सकी। बचपन में पिता का देहान्त हो जाने के कारण बारह वर्ष की अवस्था में स्कूल की पढ़ाई छोड़नी पड़ी। घर पर ही संस्कृत और अंग्रेजी पढ़ाने के लिए अध्यापक आने लगे। बचपन से ही ब्रजभाषा की कविताओं की ओर आकृष्ट हुए। पन्द्रह साल के हुए तो माँ चल बसीं। कसरत, पढ़ाई-लिखाई और दुकान देखना—यह सब प्रसादजी के लिए जरूरी हो गया। बड़े भाई शम्भूरत्नजी का सहयोग रहता। वे भी साथ छोड़ गए सत्रह वर्ष की अवस्था में। इन मृत्यु आघातों ने प्रसाद को विचलित तो किया लेकिन जीवन के अन्त के शाश्वत सत्य से उनका साथ कभी छूट न सका। मृत्यु उनके आत्मीयों को छीन कर उनसे ले जाती रही। पहली पत्नी का देहान्त हुआ। दूसरी पत्नी भी ज्यादा साथ न दे सकीं। परिवार के दबाव में उन्होंने तीसरा विवाह भी किया। खानदानी दानशीलता के अतीत ने उन्हें ऋण के बोझ से भी दबाया। सम्पत्ति का कुछ हिस्सा बेचकर वे ऋणभार से मुक्त हुए।

संस्मरणों से पता चलता है कि साहित्य सृजन और साहित्य सेवियों की संगत उनके साथ आजीवन बनी रही। उनकी स्मरण शक्ति विलक्षण थी। शिवपूजन सहाय अपने संस्मरण में लिखते हैं—''वैदिक ऋचाएँ और उपनिषदों के लच्छेदार वाक्य तो उन्हें कण्ठस्थ थे ही, संस्कृत-महाकवियों ने किस शब्द का कहाँ किस अर्थ में कैसा चमत्कारपूर्ण प्रयोग किया है, इसको भी वे सोदाहरण उपस्थित करते चलते थे।''यह प्रसादजी की अभ्यास से अर्जित विद्वता थी, जिसको बराबर उन्होंने अपने आत्मीयों के साथ साझा किया। वे कभी किसी कवि-सम्मेलन में नहीं जाते थे। मित्र-गोष्ठियों में ही सस्वर काव्य पाठ किया करते थे। इसी तरह वे अपने जीवन के अनुभवों के साथ ऐसा मन अर्जित कर चुके थे कि केवल आस्तिकता या समर्पण उनकी विशेषता नहीं थी। जैनेन्द्रजी ने बताया है—''प्रसाद ने (कभी) मस्तक नहीं झुकाया। हर मत-मान्यता को, सामाजिक हो कि नैतिक, धार्मिक हो कि राजकीय, उन्होंने प्रश्नवाचक के साथ लिया। किसी को अन्तिम नहीं माना।'' यह स्वाभिमान उनकी उस प्रकृति का हिस्सा रहा जिसे उन्होंने अपने लिए नियत किया था। वे लेखन कर्म रात में ही किया करते थे। एक तरह के साधना कर्म की उपज था उनका लेखन। नंददुलारे वाजपेयी ने लिखा है—''मैं प्रसादजी को हिन्दी का सबसे प्रथम और श्रेष्ठ शक्तिवादी कवि मानता हूँ।'' वाजपेयीजी ने जो लिखा है उसके अलावा भी प्रसादजी की सभी विशेषताओं के बीच जीवन की रसधार अपनी जगह बनाए हुई थी। उनका चित्त एक खास सौन्दर्य चेतना से निर्मित था। महादेवी वर्मा ने अपने संस्मरण में लिखा है—''सब प्रकार के अंतरंग-बहिरंग संघर्षों में मानसिक संतुलन बनाए रखने के प्रयास में ही उन्हें उस आनन्दवादी दर्शन की उपलब्धि हो गयी जिसके भीतर करुणा की अन्त:सलिला प्रवाहित है।'' अपने भीतर की धारा को वे गम्भीरता से जीते रहे।

काव्य लेखन प्रसादजी ने चोरी-छिपे शुरु किया था। अमृतलाल नागर अपने संस्मरण में लिखते हैं—''इससे यह सिद्ध होता है कि उन्हें अपनी लगन की बातों को चुराकर अपने तक ही रखने की आदत थी। यह आदत सुसंस्कारों का प्रभाव पाकर मनुष्य को अपनी लगन में एकान्त निष्ठा प्रदान करती है।'' इस विशेषता का उपयोग प्रसादजी ने अपनी रचनाशीलता के लिए बराबर किया। इसी क्रम में साहित्य की सभी प्रमुख विधाओं में उनकी सक्रियता भी बनी रही। एक निष्ठावान साहित्यिक की तरह उन्होंने सभी विधाओं में गम्भीरतापूर्वक लेखन कार्य किया। तत्सम भाषा, उच्च भावभूमि और उत्कृष्ट साहित्यिक सक्रियता के बावजूद प्रसादजी सामान्यत: बातचीत भोजपुरी बोली में ही किया करते थे। उनके आत्मीय और पड़ोसी रहे राजेन्द्रनारायण शर्मा ने अपने संस्मरण में लिखा है—''प्रसादजी कुछ साहित्यिक व्यक्तियों को छोड़कर सामान्यतया सबसे विशुद्ध भोजपुरी में ही बातें करते थे।'' यही उनकी मौलिकता भी है क्योंकि लेखक, सृजन के लिए जिस भाषा का चयन करता है वह निरन्तर संवाद की भाषा नहीं हो सकती। वैसे भी हिन्दी प्रदेश के प्रमुख क्षेत्रों में बोलियों में ही संवाद के अभ्यास की प्रथा रही है।

मोदीजी की इस पुस्तक में जयशंकरप्रसाद पर उनके समकालीनों और साहचर्य प्राप्त लेखकों व अन्यों के दो दर्जन से अधिक संस्मरण संकलित हैं। इनमें रायकृष्णदास, केशवप्रसाद मिश्र, माखनलाल चतुर्वेदी, हजारीप्रसाद द्विवेदी आदि के संस्मरण भी शामिल हैं। कुछ लेखकों के स्फुट संस्मरण और कुछ की टिप्पणियाँ भी इस पुस्तक में शामिल की गयी हैं। इसके अलावा प्रसाद के नाम लिखे कुछ वरिष्ठ साहित्यकारों के पत्र भी पुस्तक में सम्मिलित हैं। उनकी हस्तलिपि में कुछ रचनाओं के अंश भी सम्मिलित किए गए हैं। एक चित्रावली भी है जिसमें कुछ दुर्लभ छायाचित्र भी प्रकाशित किए गए हैं। इनमें प्रसाद और प्रेमचंद के एक साथ का भी छायाचित्र प्रकाशित है।

महज 49 वर्ष की अल्पायु में प्रसादजी का निधन हुआ। वे एक वर्ष से बीमार चल रहे थे और नवम्बर 1937 में चल बसे। वे राजयक्ष्मा से पीड़ित थे। उनके निधन पर दैनिक 'आज' अखबार में जो सम्पादकीय छपा था वह भी इस पुस्तक में संकलित है। संस्मरणों की यह पुस्तक प्रसादजी के जीवन, मन, रचनाकर्म और सामाजिकता के बहुविध आयाम हमारे समक्ष खोलती है।

—प्रदीपतिवारी

अंतरंग संस्मरणों में जयशंकर 'प्रसाद'
सं० : पुरुषोत्तमदास मोदी
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी
प्रथम संस्करण मूल्य : 150 रुपये

हस्तिनापुर का शूद्र महामात्य

महाभारत मंथन डॉ० युगेश्वर का अभ्यास भी रहा है और स्वभाव भी। भीष्म पितामह, अर्जुन और द्रौपदी पर उनके तीन उपन्यास क्रमश: देवव्रत, पार्थ और कृष्णा कई वर्ष पहले ही निकल चुके हैं जो यथेष्ठ चर्चित भी रहे। 'पार्थ' पर उन्हें नामित प्रेमचंद पुरस्कार भी गतवर्ष हिन्दी संस्थान से प्राप्त हुआ था।

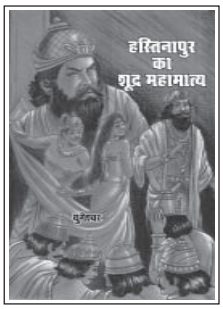

विदुर हस्तिनापुर के महामात्य थे। धृतराष्ट्र, पाण्डु और विदुर तीनों भाई थे। दासी-पुत्र होने के कारण विदुर शूद्र माने गये। कैसी विडम्बना उस युग की रही कि शूद्र द्वारा अपनी योग्यता

रही कि शूद्र द्वारा अपनी योग्यता और प्रशासनिक क्षमता के बल पर महामात्य का पद प्राप्त कर लेने पर भी उस पर शूद्र होने का ठप्पा लगा ही रहा जो आजके पाठक को उद्वेलित करता है। यह चिन्तन उस समय खुलकर सामने आया जब भीष्म पितामह ने धृतराष्ट्र और पाण्डु का विवाह राज कन्यायों से कराया जबकि विदुर के लिए राजा देवक की दासी-पुत्री का चयन किया। इसके विपरीत सौतेले भाईयों और बहनों में पारस्परिक स्नेह-सम्बन्धों को डॉ० युगेश्वर ने उजागर किया है वह सन्तोषदायक और मनोग्राही है।

एक बार धृतराष्ट्र द्वारा अपमानित होने पर विदुर जब हस्तिनापुर छोड़ कर चले गये तो धृतराष्ट्र समझता है कि विदुर जैसा शुभेक्षु दुर्लभ है और कहता है कि मैं अपने भाई के बिना एक क्षण भी नहीं जी सकता। उसकी नींद उड़ चुकी है, अपने को विदुर को भगाने का अपराधी समझता है और जब विदुर संजय द्वारा मनाने पर लौटते हैं तो भाई धृतराष्ट्र के चरणों पर झुकते हैं और कहते हैं—मेरे कारण आपको कष्ट हुआ है, मैं अपराधी हूँ। इसी प्रकार देवक पुत्री कुंती अपनी बहू और पुत्रों के वन गमन करने पर जब दुखी होती है और निश्चय करती है कि मेरा भोजन आज से वनवासियों का भोजन होगा तब उसकी आश्रयदात्री बहन विदुर पत्नी और विदुरजी घोषणा करते हैं कि हमारा भोजन भी 'आदर्श कुंती देवी' का भोजन होगा।

हस्तिनापुर में सब कुछ सामान्य था पाण्डु और माद्री की मृत्यु के बाद जब कुंती अपने पाँचों पुत्रों को लेकर वन से लौटती हैं तो उनकी देखरेख का भार धृतराष्ट्र विदुर को सौंपते हैं। ईर्ष्या और द्वेषवश दुर्योधन को पाण्डु सुहाते नहीं। विदुर दुर्योधन की कूटनीति और दुष्टता को समझते हैं। राजा को सावधान करते हैं। परन्तु राजा का पुत्रमोह अदम्य है। दुर्योधन राजा को पाण्डवों के विरुद्ध उलटे भरता है। कहता है कि पाण्डु हमारी उपेक्षा करते हैं और विदुर उनकी सहायता करता है। इस प्रकार महाभारत का घटनाक्रम आगे बढ़ता चलता है। महाभारत में विदुर की भूमिका अत्यन्त सीमित है। डॉ० युगेश्वर बया की तरह यत्र-तत्र से तिनके संजोकर इस रचना को विलक्षण रूप देने में समर्थ हुए हैं।

दुर्योधन पारिवारिकता और सामंजस्य के प्रतिकूल ही नहीं बल्कि वह पाण्डवों और विदुर का नाश करना चाहता है। इसके विपरीत विदुर का राजा को परामर्श था—साथ रहना कला है। सबको समाज में रहना है, सामंजस्य से रहना है। सामंजस्य का पालक ही श्रेष्ठ है।

व्यक्ति के साथ-साथ समाज का चिन्तन भी डॉ० युगेश्वर का अपनी जगह है। विदुर के स्थान पर जब दुर्योधन अपने मामा शकुनि को महामात्य के पद पर आसीन करना चाहता है तो जन-भावना इसके विरुद्ध है—विदेशी नागर सदा ही सन्देह से देखे जाते हैं। उन्हें प्रधान अमात्य बनाने की कल्पना भी नहीं है। हमारी स्वतंत्रता का वह काला दिवस होगा। पतन और परतन्त्रता की चरमावस्था होगी। जब विदेशी नागर शकुनि हस्तिनापुर का प्रधान होगा।

उपन्यास पठनीय है। रोचक भी है और विचारोत्तेजक भी। छोटे-छोटे वाक्यों में अपनी बात कहने में डॉ० युगेश्वर अद्वितीय हैं। शब्दों के कुछ रूप और कुछ वाक्य प्रयोग परम्परा से हट कर हैं विचारणीय भी।

पूरा ग्रन्थ सुन्दर उक्तियों से ओतप्रोत है। यह इस ग्रन्थ की अपनी विशेषता है, जैसे—प्रेम मन का विस्तार है, द्वेष मन का संकोच है। प्रेम का चश्मा कठिनाई से लगता है। लोभ, द्वेष, निन्दा का चश्मा आसानी से लग जाता है। पाण्डित्य भी व्यवसाय है। राज्य पाण्डित्य की धारा को अपने अनुकूल मोड़ता रहता है। सत्य का साक्षी सदा सुखी रहता है। न्यायाधीश सूली का दण्ड देकर भी पाप का भागी नहीं बनता। तो भी निरपराध की आँखों में अग्नि का निवास होता है। यह अग्नि अपराधी को जला सकती है। इस छोटी परन्तु अनमोल रचना के लिए डॉ० युगेश्वर को बधाई।

— बदरीनाथ कपूर

हस्तिनापुर का शूद्र महामात्य
लेखक : युगेश्वर
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी
मूल्य : 140 रुपये

अक्षर बीज की हरियाली

भारतीय परिवेश से सम्पृक्त रचनात्मक संवेदना, ग्राम्यजीवन की चिन्ता एवं सर्जनात्मक अभिव्यक्ति की लालसा से समन्वित एवं मंडित वस्तुनिष्ठ तलस्पर्शी अंकन ने डॉ० विवेकी राय को हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में बहुआयामी व्यक्तित्व से सम्पन्न एवं समृद्ध साहित्य-सर्जक घोषित किया है जिसमें उनका कवि, उपन्यासकार, कहानीकार, निबन्धकार, व्यंग्यकार, समीक्षक, सम्पादक, रेखाचित्र एवं रिपोर्ताज लेखक रूप मुखरित हुआ है। डॉ० वेदप्रकाश 'अमिताभ' ने 'अक्षर बीज की हरियाली' शीर्षक से उनके विविध बहुआयामी व्यक्तित्व एवं कृतित्व का सर्वेक्षण-निरीक्षण गम्भीर परीक्षणोपरान्त किया है जिससे उनकी प्रखर प्रज्ञा एवं साहित्यानुशीलन की तटस्थतावादी तलस्पर्शी दृष्टि का पता चलता है। कृति दो खण्डों में विभक्त है। प्रथम खण्ड में अनुशीलन शीर्षकान्तर्गत रचना-संसार, काव्य-रचना, उपन्यास कर्म, उपन्यास-परिवेशबोध, कहानीयात्रा, ललित निबन्ध, कथालोचन, व्यंग्यसाहित्य, भोजपुरी रचनाएँ एवं सम्पादन-कर्म के माध्यम से विवेकीराय को कवि, उपन्यासकार, कहानीकार, निबन्धकार, व्यंग्यकार, समीक्षक, सम्पादक, रेखाचित्र एवं रिपोर्ताज-लेखक के रूप में प्रतिष्ठित एवं अधिष्ठित करने का सार्थक प्रयास किया गया है। द्वितीय समीक्षा खण्ड के अन्तर्गत पन्द्रह आलेख समाहित हैं जिससे समीक्षा की भिन्न-भिन्न दृष्टियों का आभास होता है।

विभिन्न साहित्यिक विधाओं का समग्र-अनुशीलन बेजोड़, बेबाक एवं बेमिसाल है जिसको डॉ० अमिताभ का समीक्षक संवेदनशीलता की तरलता से सहजता प्रदान कर सका है क्योंकि पुष्कल, समृद्ध एवं प्रामाणिक साहित्य-सर्जक विवेकीराय की विवेकपूर्ण साहित्य-सर्जना एक नव्य दृष्टि का उन्मेष करती हुई एक नव्य-क्षितिज का विस्तार करती है तथा अद्यतन साहित्य-समीक्षकों को नव्य चिंतन के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित करती है।

— डॉ० पशुपतिनाथ उपाध्याय

अक्षर बीज की हरियाली
लेखक : वेदप्रकाश 'अमिताभ'
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी
प्रथम संस्करण मूल्य : 180 रुपये

कैबरे डांसर की व्यथा-कथा

आलोच्य उपन्यास 'चरित्रहीन' सुपरिचित रचनाकार आबिद सुरती द्वारा मूलत: गुजराती में साठ के दशक में लिखा गया था जिसका हिन्दी अनुवाद आशित हैदराबादी द्वारा किया गया है।

'चरित्रहीन' कैबरे डांस करने वाली एक युवती के संघर्षों की दास्तान है। साठ के दशक में कैबरे डांस की पूरी दुनिया में धूम मची थी। कैबरे डांसर तरु भी कैबरे डांस करती थी और जैसा कि ऐसे डांस में होता है वह अपने जिस्म की नुमाइश करती थी लेकिन धीरे-धीरे इस पेशे से वह ऊबने लगी और अंतत: उसने मि० केके से शादी कर ली। लेकिन जमाने को यह रास नहीं आया। मंच की दुनिया को अलविदा कहकर गृहस्थी बसाने वाली कैबरे डांसर तरु को दुनिया चैन से जीने नहीं देना चाहती। साथ ही तरु को पत्नी के पवित्र रिश्ते में स्वीकार करने वाले मि० केके का न केवल अपना जीवन तबाह हो जाता है बल्कि इसका खामियाजा उसकी बहन सीमा को भी भुगतना पड़ता है। केके की नौकरी तो छिन ही जाती है उसे मकान खाली कर एक परिचित महिला के यहाँ शरण लेना पड़ता है। तरु को बार-बार लांछन सुनना पड़ता है और केके की बहन सीमा को उसके प्रेमी के पिता अपमानित कर शादी से इनकार कर देते हैं जिसके फलस्वरूप वह विक्षिप्त हो जाती है। पूरे उपन्यास के केन्द्र में तरु का कैबरे डांसर के रूप में जिस्म की नुमाइश करने को रखा गया है और उसी से प्रभावित अन्य घटनाएँ हैं। हालांकि लेखक

इसका निर्वाह करने में कुछ स्थलों पर चूका भी है लेकिन कुल मिलाकर केन्द्र में तरु का कैबरे डांसर होना ही है।

इस उपन्यास का कथानक एवं परिवेश हालांकि साठ के दशक का है लेकिन अपने अंतर्वस्तु के कारण यह आज भी प्रासंगिक है। उपन्यासकार ने इस तथ्य को बड़ी संजीदगी से रेखांकित किया है कि हमारे समाज में जहाँ एक पुरुष कई स्त्रियों के साथ रह सकता है वहीं एक कुशल नृत्यांगना को समाज में सम्मान के साथ जीने का अधिकार नहीं है। लेखक ने कैबरे डांसर तरु के जीवन की तमाम घटनाओं, घात-प्रतिघातों, संघर्ष एवं सामाजिक विडंबनाओं को प्रश्नाकुल दृष्टि से चित्रित करने का प्रयास किया है लेकिन उपन्यास के अन्त में घटनाक्रम जिस नाटकीयता के साथ बदलता है वह उपन्यास के प्रभाव को क्षति पहुँचाता है और पाठक को एक नकली कथा का आभास करा जाता है।

इस उपन्यास को रोचक बनाने के लिए लेखक ने इसमें प्रेम, घृणा, हिंसा, सेक्स आदि मसालों का प्रयोग किया है जिससे यह बालीवुड की फिल्मी कथानक जैसा प्रभाव भी पाठक के मन पर छोड़ता है।

स्वच्छ, स्वत: स्फूर्त और पारदर्शी भाषा इस उपन्यास की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है लेकिन वैचारिक प्रतिबद्धता के बावजूद गहन जीवन दर्शन और आत्ममंथन के आलोचनात्मक विमर्श की अनुपस्थिति उपन्यास को इकहरेपन के घेरे में ला देती है।

आशित हैदराबादी ने अनुवाद बहुत अच्छा किया है जिस कारण इसकी पठनीयता आकृष्ट करती है।

— राष्ट्रीय सहारा से

चरित्रहीन

लेखक : आबिद सुरती

अनुवाद : आशित हैदराबादी

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी

प्रथम संस्करण मूल्य : 180 रुपये

वेद की कविता

(वैदिक सूत्रों का हिन्दी काव्यान्तर)

वेद अनन्त ज्ञान राशि के अक्षय भण्डार हैं, वे हमारी संस्कृति के मूल स्रोत हैं, भारतीय संस्कृति के इतिहास में वेदों का स्थान अतिशय गौरवपूर्ण है। वेदों की रचना सहस्रों वर्ष पूर्व हुई है। चारों वेदों में सबसे प्राचीन ऋग्वेद है। प्राचीनतम मानव मस्तिष्क के धार्मिक तथा दार्शनिक विचारों का स्वरूप सबसे पहले ऋग्वेद में ही मिलता है।

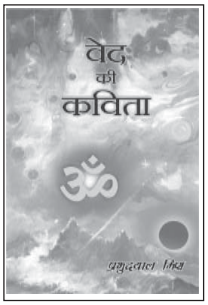

वेद मंत्रों के अर्थ अथवा अनुवाद कार्य की अपनी कठिनाइयाँ तो हैं ही, इसीलिए इस क्षेत्र में विद्वान कम ही आगे आए हैं। मंत्रों की काव्यात्मक प्रस्तुति तो और भी कठिन कर्म है। इस दृष्टि से श्री प्रभुदयाल मिश्र की हाल ही में प्रकाशित कृति 'वेद की कविता' एक प्रशंसनीय प्रयास है। इस पुस्तक में श्री मिश्र ने ऋग्वेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद के कतिपय चुने हुए सूक्तों का काव्यात्मक अनुवाद प्रस्तुत किया है। पुस्तक में आठ अध्याय हैं, जिनमें सूक्तों को उनके विषय के आधार पर गुम्फित कर रखा गया है। श्री मिश्र ने अपने कथन में सूक्तों के चयन और उन्हें विशिष्ट शीर्षों में बाँधना महज संयोग बतलाया है। काव्य, छन्दोबद्ध और मुक्त छन्द, उभय विधाओं में उपलब्ध हैं। अनुवाद कार्य में सहजता एवं काव्यात्मकता संरक्षित है। अनुवाद की भाषा बोधगम्य है। अनावश्यक दुरूहता से कोसों दूर प्रस्तुति में श्री मिश्र का मंत्र के मूल तक पहुँचने का प्रयास है।

— डॉ० रामकृष्ण सराफ

वेद की कविता

कवि : प्रभुदयाल मिश्र

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी

प्रथम संस्करण मूल्य : 120 रुपये

वाक्सिद्धि

कल्याणमल लोढ़ा ने श्री विद्या की उपासना के प्रभाव में वाक्-तत्त्व को आधार बना कर दो प्रकार की पुस्तकें लिखी हैं—एक तो वे, जो उपासना के साधना-पक्ष पर प्रकाश डालती हैं; दूसरी वे, जिनमें वाग्देवी के कुछ उपासकों की साहित्य-साधना का विवेचन है। तार्किक आधार पर दोनों प्रकार की पुस्तकों को वाक्-शृंखला के अन्तर्गत रखने का औचित्य सिद्ध किया जा सकता है लेकिन वास्तव में वाग्विभव, वाग्दोह, वाग्द्वार, वाक्सिद्धि जैसे शीर्षक एक-से ही जान पड़ते हैं; इन शीर्षकों से उपर्युक्त भेद सूचित नहीं होता। आलोच्य-पुस्तक 'वाक्सिद्धि' की 'वाङ्मुख' शीर्षक भूमिका भी दूर तक इसके साधना-मार्ग की पुस्तक होने का भ्रम कराती है जबकि यह साहित्यिक पुस्तक ही है।

भूमिका में लेखक की शिकायत यह है कि साहित्य के इतिहासकारों ने उत्तर-भारतेन्दु युग की प्राय: उपेक्षा की है। इसे संदर्भभूत रखें तो प्रथम दो लेखों 'भारतीय नवजागरण' और 'हिन्दी की सार्वभौमिकता' को इसके प्रतिकार की भूमिका के रूप में देखा जा सकता है और हिन्दी-गद्य को सौष्ठवपूर्ण बनाने वाले शलाका पुरुष बालमुकुंद गुप्त के अवदान के विवेचन को ऋण-मुक्ति के किंचित् प्रयत्न के रूप में। यदि शेष निबन्ध भी इसी विषय पर केन्द्रित रहते तो उपेक्षा का कुछ प्रतिकार तो होता ही, पुस्तक को भी सुसंगति मिल जाती, लेकिन इसके बजाय लेखक ने एक निबन्ध में सुभद्राकुमारी चौहान के कवित्व का विवेचन किया है और दो निबन्धों में राधा और कर्ण को उपजीव्य बना कर लिखे गए काव्यों का परिचय दिया है। लेखक की उपर्युक्त शिकायत से इन निबन्धों की कोई वस्तु-संगति नहीं बैठती। हर रचनाकार वाणी का उपासक होता है, साधना और सिद्धि की कोटियाँ चाहे एक-सी न भी हों। इस मोटे अर्थ में ही पुस्तक का शीर्षक वाक्सिद्धि उचित कहा जा सकता है।

बालमुकुंद गुप्त के विवेचन के साथ जोड़े गए परिशिष्ट में उनके गद्य की बानगी ने इस बात को प्रभावी ढंग से उजागर किया है कि वे किस दृढ़ता और निर्भीकता से अपना कलम-कुल्हाड़ा चलाते थे। उनकी विद्वत्ता, वैचारिक तेजस्विता और व्यंग-विनोद की उन्मुक्त वृत्ति भी इससे खूब उभरी है। इसी तरह सुभद्राकुमारी चौहान की कविता के स्मरण का महत्त्व तो है ही, उसके सन्दर्भ में बैलेड (गाथागीत) का जो विवेचन है और 'झाँसी की रानी' कविता को उस रूप में देखने का जो प्रयत्न है, वह भी हमारा ध्यान आकर्षित करता है।

लोढ़ाजी के विवेचन में एक विशेषता मिलती है—सामग्री संकलित करते हुए स्रोतों की व्यापक छानबीन करना, इतिहास में झाँकना, क्षीण संकेत-सूत्रों का भी संग्रह करना, समधर्मी विदेशी हवालों को भी सूचीबद्ध करना, शब्दकोशों और विश्वकोशों से नोट्स लेना और इस प्रकार अथक परिश्रम से आलेख तैयार करना। 'भारतीय नवजागरण' की सामग्री वे देशी-विदेशी स्रोतों से जुटाते हैं तो हिन्दी की सार्वभौमिकता का प्रतिपादन वे दक्षिण और पूर्वी राज्यों तक में 'हिन्दी' शब्द के भूले-भटके मिल जाने वाले उल्लेखों तक का संग्रह करके करते हैं। **— मोहनकृष्ण बोहरा**

समकालीन भारतीय साहित्य

वाक्सिद्धि

लेखक : प्रो० कल्याणमल लोढ़ा

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी

प्रथम संस्करण मूल्य : 160 रुपये

वेदों में समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र और शिक्षाशास्त्र

डॉ० कपिलदेव द्विवेदी

वेद आर्यजाति के प्राण-स्वरूप हैं। मनु महाराज ने वेदों को सर्वज्ञानमय कहा है। वेदों में अध्यात्म आदि के अतिरिक्त समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र और शिक्षाशास्त्र के सिद्धान्त भी सूत्ररूप में मिलते हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ में उन सभी सिद्धान्तों, तथ्यों और सन्दर्भों का विशद विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

समाजशास्त्र से संबद्ध विषयों में वर्ण-जाति, वर्णाश्रम-व्यवस्था, विविध संस्कार, नारी का गौरव, परिवार और समाज, नगर और ग्राम, भवन-निर्माण, अन्न-पान, वस्त्र-परिधान, आभूषण-अलंकरण, ललित कलाएँ, यातायात के विविध साधनों आदि का विवेचन किया गया है।

अर्थशास्त्र से संबद्ध विषयों में ये विषय मुख्यरूप से दिए गए हैं। कृषि, फसलें, पशुपालन, जीवजन्तुओं के विभिन्न वर्ग और नाम, औषधियों और वनस्पतियों के नाम एवं गुणधर्म, विविध शिल्प, विविध वृत्तियाँ, अर्थ-व्यवस्था, कोश-संचय के साधन, उत्तराधिकार और

दायभाग, व्यापार और वाणिज्य, आयात-निर्यात, विविध धातुएँ, मुद्राएँ आदि।

शिक्षाशास्त्र से संबद्ध विषयों में शिक्षा का महत्त्व, शिक्षा-मनोविज्ञान, शिक्षक और शिष्य के गुण तथा कर्तव्य, शिक्षा के विषय, शिक्षा की सामाजिक उपयोगिता।

पद्मश्री डॉ० कपिलदेव द्विवेदी की गणना वेदों के मूर्धन्य पण्डितों में की जाती है। प्रस्तुत शोधपूर्ण ग्रन्थ से लेखक की मौलिक प्रतिभा का दर्शन होता है। वेदप्रेमियों के लिए यह अत्यन्त उपयोगी ग्रन्थ है।

पेपरबैक : **150.00** सजिल्द : **200.00**

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन

चौक, वाराणसी

उमर खैय्याम की रुबाइयाँ

रूपान्तरकार

गोविन्दप्रसाद श्रीवास्तव

प्रकाशक

राजनन्दन, सी-24/4, कबीरचौरा, वाराणसी

मूल्य : 70 रुपये

श्री गोविन्दप्रसाद अवकाशप्राप्त न्यायधीश हैं, अत्यन्त संवेदनशील हैं, उनके अनेक संस्मरण समाचारपत्रों में प्रकाशित होते रहे हैं। बहुत पूर्व उन्होंने रुबाइयों का सरस अनुवाद किया था, वह अब प्रकाशित हुआ है।

''आज डुबो दो पिछले पछतावों को, प्रिया भर दो प्याला। भावी सभी दु:खों को भी पी जायेगी मधुमय हाला।''

अनेक भावपूर्ण रेखांकन तथा रंगीन आवरण ने पुस्तक को प्रभावी तथा आकर्षक बना दिया है। श्री गोविन्दप्रसाद की न्यायधीश पुत्री विजयलक्ष्मी की इस कला ने रुबाइयों को भावपूर्ण चित्रात्मकता प्रदान की है। आज के परिवेश में उमर खैय्याम की रुबाइयों का यह रूपान्तरण अत्यन्त प्रासंगिक है।

फणीश्वरनाथ रेणु और उनका कथा साहित्य

डॉ० रागिनी वर्मा

320.00

रेणु ने कहा था—''मैंने जिन शब्दों का इस्तेमाल किया, जैसी भाषा लिखी, क्या पता उसको लोग कबूल करेंगे या नहीं करेंगे....इसलिए मैंने उसे आंचलिक उपन्यास कह दिया।''

आंचलिक उपन्यास के जनक रेणुजी का कथा साहित्य में अन्यतम योगदान है। आंचलिक उपन्यासों की जो परम्परा उन्होंने शुरू की उसने हिन्दी कथा साहित्य की दिशा बदल दी। ग्रामीण जीवन, उसकी भाषा-बोली, संस्कार, हर्ष-विषाद को जिस मार्मिकता से रेणुजी ने अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया है वह बेजोड़ है। ऐसे कथाकार के समग्र कथा साहित्य का विस्तृत अध्ययन इस ग्रन्थ की विशेषता है। निर्मल वर्माजी का कथन है—

''मैं रेणु के उपन्यासों को बहुत पसन्द करता हूँ, लेकिन उनके पात्रों का सृजन करने की कल्पना कर ही नहीं सकता। रेणु का जीवन, परिवेश, ग्राम्य अनुभव, लोक-संगीत, यह सब उनके अपने निजी अनुभव की सम्पदा है कि एक कृति के रूप में उनका रसास्वाद तो मैं कर सकता हूँ। लेकिन इस तरह के उपन्यास रचने की बात सोच भी नहीं सकता।''

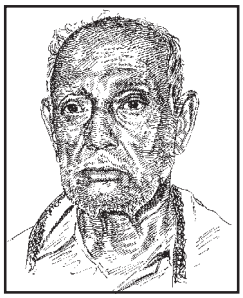

म०म०पं० गोपीनाथ कविराज के ग्रन्थ

मनीषी की लोकयात्रा (म.म.पं. गोपीनाथ कविराज का जीवन-दर्शन) 300
तांत्रिक वाङ्मय में शाक्त दृष्टि 100
साधुदर्शन एवं सत्प्रसंग (भाग 1-2) 80
साधुदर्शन एवं सत्प्रसंग (भाग 3) 50
तन्त्राचार्य गोपीनाथ कविराज और योग-तन्त्र-साधना *रमेशचन्द्र अवस्थी* 50
परातंत्र साधना पथ 40
योगिराज विशुद्धानन्द प्रसंग तथा तत्त्वकथा 250
श्री श्री सिद्धिमाता प्रसंग 20
(कायाभेदी ब्रह्मवाणी तथा विवरण सहित)
भारतीय धर्म साधना *म.म.पं. गोपीनाथ कविराज* 80
तन्त्र और आगम शास्त्रों का दिग्दर्शन 15
ज्ञानगंज 60
कविराज प्रतिभा 64
दीक्षा 60
श्री साधना 50
स्वसंवेदन 50
प्रज्ञान तथा क्रमपथ 80
तांत्रिक साधना और सिद्धान्त 120
श्रीकृष्ण प्रसंग 250
काशी की सारस्वत साधना 35
शक्ति का जागरण और कुण्डलिनी 100
भारतीय संस्कृति और साधना (भाग-1) 200
भारतीय संस्कृति और साधना (भाग-2) 120
सनातन-साधना की गुप्तधारा 100
अखण्ड महायोग 50
क्रम साधना 60
भारतीय साधना की धारा 30
परमार्थ प्रसंग (प्रथम खण्ड) 150
अखण्ड महायोग का पथ और मृत्यु विज्ञान 20

पं० गोपीनाथ कविराज समकालीन संत-महात्मा

सूर्य विज्ञान प्रणेता योगिराजाधिराज स्वामी विशुद्धानन्द परमहंसदेव : जीवन और दर्शन *नंदलाल गुप्त* 160
English Edition *In Press*
योगिराज विशुद्धानन्द प्रसंग तथा तत्त्व कथा *म.म.पं. गोपीनाथ कविराज* 250
पुराणपुरुष योगिराज श्री श्यामाचरण लाहिड़ी *सत्यचरण लाहिड़ी* 120
नीम करौरी के बाबा *डॉ. बदरीनाथ कपूर* 12
शिवस्वरूप बाबा हैड़ाखान *सद्गुरुप्रसाद श्रीवास्तव* 150
सोमबारी महाराज (उत्तराखण्ड की अनन्य विभूति) *हरिश्चन्द्र मिश्र* 50
Purana Purusha Yogiraj Sri Shyama Charan Lahiree *Dr. Ashok Kr. Chatterjee* 400

तंत्रसिद्ध पुराण पुरुष योगिराज श्री श्यामाचरण लाहिड़ी

पुराण पुरुष योगिराज श्री श्यामाचरण लाहिड़ी (जीवनी) 120
धर्म और उसका अभिप्राय 80
प्राणमयं जगत *अशोककुमार चट्टोपाध्याय* 22
श्यामाचरण क्रियायोग व अद्वैतवाद 100
आत्मबोध *श्रीभूपेन्द्रनाथ सान्याल* 30
श्रीमद्भगवदगीता (3 खण्डों में) '' 375
विल्व-दल (द्वितीय खण्ड) *श्री भूपेन्द्रनाथ सान्याल* 25
आश्रम चतुष्टय *श्री भूपेन्द्रनाथ सान्याल* 25
मोक्ष साधन या योगाभ्यास *श्री भूपेन्द्रनाथ सान्याल* 15
दिनचर्या *श्री भूपेन्द्रनाथ सान्याल* 20
आत्मानुसंधान और आत्मानुभूति '' 20
Purana Purusha Yogiraj Shri Shyama Charan Lahiree (*Biography*) 400
योग एवं एक गृहस्थ योगी : योगिराज सत्यचरण लाहिड़ी *शिवनारायण लाल* 150

पं० अरुणकुमार शर्मा के ग्रन्थ

मारणपात्र 250
तिब्बत की वह रहस्यमयी घाटी 180
वह रहस्यमय कापालिक मठ 180
मृतात्माओं से सम्पर्क 200
परलोक विज्ञान 300
कुण्डलिनी शक्ति 250
तीसरा नेत्र (भाग-1) 250
तीसरा नेत्र (भाग-2) 300
मरणोत्तर जीवन का रहस्य (भाग-1) 35

अन्य आध्यात्मिक तथा धार्मिक ग्रन्थ

धर्म क्षेत्रे कर्म क्षेत्रे : श्रीमद्भगवद्गीता *स्यमन्तक मणि मिश्र* 94
सब कुछ और कुछ नहीं *मेहेर बाबा* 60
ध्यानयोग *दयानंद वर्मा* 50
जपसूत्रम (प्रथम तथा द्वितीय खण्ड) *स्वामी श्री प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती* (प्रत्येक) 150

सोमतत्व *सं. प्रो. कल्याणमल लोढ़ा* 100
वेद व विज्ञान *स्वामी श्री प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती* 80
सृष्टि और उसका प्रयोजन (मेहेर बाबा) *शिवेन्द्र सहाय* 65
गुप्त भारत की खोज *पाल ब्रंटन* 125
भारतीय संस्कृति की रूपरेखा *डॉ० पृथ्वीकुमार अग्रवाल* 120

चिंतक, संत, योगी, महात्मा

उत्तराखण्ड की सन्त परम्परा *डॉ. गिरिराज शाह* 100
सन्त रैदास *श्रीमती पद्मावती झुनझुनवाला* 60
योगिराज तैलंग स्वामी *विश्वनाथ मुखर्जी* 40
ब्रह्मर्षि देवराहा-दर्शन *डॉ. अर्जुन तिवारी* 50
भारत के महान योगी
भाग 1-2 (संयुक्त) *विश्वनाथ मुखर्जी* 100
भाग 3-4 (संयुक्त) *विश्वनाथ मुखर्जी* 100
भाग 5-6 (संयुक्त) *विश्वनाथ मुखर्जी* 100
भाग 7-8 (संयुक्त) *विश्वनाथ मुखर्जी* 100
भाग 9-10 (संयुक्त) *विश्वनाथ मुखर्जी* 100
भारत की महान साधिकाएँ *विश्वनाथ मुखर्जी* 40
महाराष्ट्र के संत महात्मा *ना.वि. सप्रे* 120
शिवस्वरूप बाबा हैड़ाखान *सद्गुरुप्रसाद श्रीवास्तव* 150
दयानन्द जीवन गाथा *भवानीलाल भारतीय* (यंत्रस्थ)
आदि शंकराचार्य *डॉ० जयराम मिश्र* 80
एकता के दूत शंकराचार्य *डॉ. दशरथ ओझा* 125
गुरुनानक देव : जीवन और दर्शन *डॉ. जयराम मिश्र* 125
स्वामी रामतीर्थ : जीवन और दर्शन ,, 200
चैतन्य महाप्रभु *अमृतलाल नागर* 90
भगवान बुद्ध *धर्मानन्द कोसाम्बी* 160
करुणामूर्ति बुद्ध *गुणवंत शाह* 25
कथा त्रिदेव की *रामनगीना सिंह* 50
पूर्वांचल के संत-महात्मा *परागकुमार मोदी* 80
स्वामी दयानंद जीवन गाथा *भवानीलाल भारतीय* 180
महामानव महावीर *गुणवंत शाह* 30
मानव पुत्र ईसा : जीवन और दर्शन *डॉ. रघुवंश* 160

श्रीमद्भगवद्गीता

गीता रहस्य *लोकमान्य तिलक* 300
हिन्दी ज्ञानेश्वरी *संत ज्ञानेश्वर, अनु. ना.वि. सप्रे* 180
श्रीमद्भगवद्गीता (3 खण्ड) *श्यामाचरण लाहिड़ी* 375
गीता प्रवचन *विनोबा भावे* 20
गीता प्रबन्ध *श्री अरविन्द* 150
गीता-तत्त्व-बोध (खण्ड 1-2) *बालकोबा भावे* 300
कृष्ण का जीवन संगीत *गुणवंत शाह* 300
कृष्ण और मानव सम्बन्ध *हरीन्द्र दवे* 80
श्रीमद्भगवद्गीता *शांकरभाष्य, नीलकण्ठी* 400
श्रीमद्भगवद्गीता (2 भाग) *मधुसूदन टीका, हिन्दी व्याख्या* 1250
यथार्थगीता *स्वामी अड़गड़ानन्द* 150
भारत सावित्री (3 भाग) *वासुदेवशरण अग्रवाल* 80
श्रीमद्भगवद्गीता : आधुनिक व्याख्या *दयानंद वर्मा* 100

उपन्यास

पांचाली (नाथवती अनाथवत्) *डॉ० बच्चन सिंह* 125
हस्तिनापुर का शूद्र महामात्य *युगेश्वर* 140
मैत्रेयी (औपनिषदिक उपन्यास) *प्रभुदयाल मिश्र* 120
तरुण संन्यासी (विवेकानंद) *राजेन्द्रमोहन भटनागर* 120
चरित्रहीन *आबिद सुरती* 180
लोकऋण *विवेकी राय* 80
बबूल *विवेकी राय* 40
कलजुगी उपनिषद् *दयानंद वर्मा* 175
जिंदाबाद मुर्दाबाद *दयानंद वर्मा* 50

भोजपुरी साहित्य

भोजपुरी लोकसाहित्य *डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय* 400
पुरइन पात (पाठ्य ग्रन्थ) *सं० डॉ० अरुणेश 'नीरन', चितरंजन मिश्र* 80
पुरइन पात (भोजपुरी साहित्य चयन) ,, 200
बदमाश दर्पण (तेग़ अली) *सं० श्री नारायणदास* 60

संस्मरण

भारतीय मनीषा के अग्रदूत : पं० मदनमोहन मालवीय *सं० डॉ० चन्द्रकला पाडिया* 150
अंतरंग संस्मरणों में जयशंकर 'प्रसाद' *सं० पुरुषोत्तमदास मोदी* 150
पश्चिम के तीन रंग *दयानंद वर्मा* 85

अभिनय कला, भाषण, वार्ता

बोलने की कला *डॉ० भानुशंकर मेहता* 250

अर्थशास्त्र एवं समाजशास्त्र

समाजदर्शन की भूमिका *डॉ० जगदीशसहाय वर्मा* 180
भारतीय आर्थिक एवं सामाजिक चिन्तन *कृष्णकुमार सोमानी* 75

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 3 **मई 2002** **अंक : 5**

प्रधान सम्पादक
पुरुषोत्तमदास मोदी

सम्पादक
परागकुमार मोदी

वार्षिक शुल्क
रु० 30.00

विश्वविद्यालय प्रकाशन
वाराणसी
के लिए
अनुरागकुमार मोदी
द्वारा प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०
वाराणसी
द्वारा मुद्रित

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत **रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2002**
Licenced to post without prepayment at
G.P.O. Varanasi
Licence No. LWP-VSI-01/2001

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन
प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता
(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)
विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149
चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN
Premier Publisher & Bookseller
(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)
Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149
Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

: (0542) 353741, 353082 ● Fax : (0542) 353082 ● E-mail : vvp@vsnl.com ● vvp@ndb.vsnl.net.in